Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 मयानन्द उपाध्याय
शोध निर्देशक, विभागाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र,
राजा श्रीकृष्ण दत्त स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश।

रीमा
शोधकर्त्री,
एम.ए. (शिक्षाशास्त्र), एम.एड्., नेट।

सारांश–वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में शोध विधि के रूप में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में समग्र के रूप में वाराणसी जनपद में स्थित उन सभी वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरुष शिक्षकों को लिया गया है जो वर्तमान समय में शिक्षण के कार्य को सम्पादित कर रहे हैं। प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श चयन विधि के रूप में साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि का प्रयोग करके वाराणसी जनपद के प्राथमिक स्तर के 40 विद्यालयों का चयन किया गया जिसमें से न्यायदर्श के रूप में 100 शिक्षकों (50 वित्तपोषित तथा 50 स्ववित्तपोषित) का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापक कृत्य संतोष मापनी (1980) का प्रयोग किया गया है। यह मापनी प्रो0 एस0 पी0 गुप्ता व जे0 पी0 श्रीवास्तव द्वारा निर्मित व मानकीकृत है। यह मापनी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि को मापने के लिए किया गया है। सांख्यिकीय की प्राविधियों का प्रयोग टी–अनुपात का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि– वित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों में कार्य सन्तुष्टि स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है। वित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् पुरुष शिक्षकों में कार्य सन्तुष्टि स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है। वित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् महिला शिक्षकों में कार्य सन्तुष्टि स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है।

प्रमुख शब्द– वित्तपोषित, स्ववित्तपोषित, प्राथमिक विद्यालय, शिक्षक, कार्य सन्तुष्टि, तुलना।

प्रस्तावना– किसी भी शिक्षण संस्थान की प्रतिष्ठा उसमें कार्यरत (सेवारत) अध्यापकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। किसी भी समाज में समय और स्थान से परे शिक्षक को अत्यधिक सम्मान प्राप्त होता है। उससे आशा की जाती है कि वह छात्रों के लिए अत्यधिक प्रेरणा व संवेगात्मक स्रोत बने। यह शिक्षकों की निष्ठा तथा बलिदान ही है जो उनको समाज में अद्वितीय सम्मान दिलाते हैं। किन्तु यक्ष प्रश्न यह है कि ऐसे शिक्षक कहाँ और कैसे मिलेगें? सुयोग्य शिक्षकों की कमी उचित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में एक अवरोध है। मेधावी युवा पीढ़ी के लिए, उनमें प्रेरणा उत्पन्न करने के लिए तथा उनके अन्दर वांछनीय दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए शिक्षण व्यवसाय को उच्च आकांक्षा पूर्तिकर्ता होने की आशा की जाती है। शायद ही कोई इस

बात से इन्कार कर सकता है कि शिक्षण, एक व्यवसाय के रूप में समर्पण एवं सेवा भाव की मांग करता है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता है कि कोई व्यक्ति प्राथमिक स्कूल का शिक्षक है अथवा विश्वविद्यालय का प्रोफेसर, दोनों में ही अपने व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए।

वास्तव में अध्यापक ही किसी राष्ट्र के भाग्य के निर्णायक होते हैं। वे राष्ट्र के वास्तविक शिल्पकार होते हैं। किसी राष्ट्र की महानता उसकी ऊँची– ऊँची इमारतों, विशाल परियोजनाओं तथा विशाल सेनाओं पर निर्भर नहीं करती है बल्कि किसी राष्ट्र की महानता का स्वतः परीक्षण उसके नागरिकों की गुणवत्ता से होती है। यदि एक राष्ट्र अपने नवयुवकों को चरित्रवान बनाकर और उनके अन्दर दोषरहित राष्ट्रप्रेम उत्पन्न कर सके तो वह सभी क्षेत्रों में तेजी से प्रगति करने में सफल हो जायगा। शिक्षण व्यवसाय को नवयुवकों के संरक्षण में सौंप दिया जाय और यदि ऐसा करना है तो उसके लिए शिक्षकों का यह परम व पवित्र कर्त्तव्य है कि छात्रों को अच्छा नागरिक बनाने के लिए उन्हें अच्छी प्रकार की शिक्षा प्रदान करें। इस प्रकार अध्यापक अपनी देखभाल में सौंपे गये बालकों पर ध्यान देकर, भारत के भविष्य का निर्माण करने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

शिक्षा किसी देश की सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक उन्नयन तथा सांस्कृतिक स्थानान्तरण में परिवर्तन लाने का एक अति प्रभावशाली उपकरण है। हमारे देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से शिक्षा का विकास एवं विस्तार अद्भुत रहा है और यह देश के भविष्य के लिए एक अच्छा संकेत है। शिक्षा का उद्देश्य तभी पूरा हो सकता है जब शिक्षण व्यवसाय में जाने वाले लोग सुयोग्य, प्रतियोगी, प्रशिक्षित तथा शिक्षण व्यवसाय में अत्यधिक रुचि लेने वाले हों। दुर्भाग्यवश इस तेजी से बदलते विश्व में इस तरह के शिक्षकों का मिलना, बहुत कठिन है। नये वैज्ञानिक युग की चुनौतियों तथा सामाजिक आवश्यकताओं के लिए अप–टू–डेट शिक्षकों की आवश्यकता होती है।

प्रो0 हुमायूँ ने शिक्षक की महत्वपूर्ण स्थिति पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि – *''वे शिक्षक ही है जो राष्ट्र के भाग्य निर्णायक है।''* यह कथन प्रत्यक्ष रूप से सत्य प्रतीत होता है। किन्तु अब इस बात पर अधिक बल देने की आवश्यकता है कि शिक्षक ही शिक्षा की पूर्ण निर्माण की महत्वपूर्ण कुंजी है।

शिक्षण प्रक्रिया को सफल बनाने में टैगोर ने शिक्षक को अतिमहत्वपर्ण दायित्व सौंपा है। उन्होंने बालक को दैवीय प्रकाशयुक्त माना है। जिसको देखना शिक्षक का प्रमुख दायित्व हैं। इस सम्बन्ध में **टैगोर** ने लिखा है कि – *''जो भावी यश के तेज प्रकाश को नहीं देखते अपने ज्ञान, पद और राष्ट्रभाव के दर्पण में उससे सर्वदा घृणा करते हैं, वे एक अध्यापक के पद के अयोग्य है।''* दूसरी ओर टैगोर का यह भी कथन है कि शिक्षक को आचरण तथा व्यवहार में अच्छा होना चाहिए ताकि विद्यार्थी उसका अनुसरण कर स्वयं अच्छा आचरण तथा व्यवहार करें।

कार्य संतुष्टि की अवधारणा पश्चिम की देन है। आधुनिक भौतिकवादी युग में व्यवसाय से मिलने वाले संतोष को पश्चिम समाज को जीवन का अभीष्ट लक्ष्य माना जाता है। भारतीय समाज में सन्तुष्टि की जिस धारणा का उल्लेख मिलता है वह अत्यन्त व्यापक एवं अनेक क्षेत्रों से उत्पन्न होती है। कार्य संतुष्टि उसका एक पक्ष है। कार्य सन्तुष्टि के सन्दर्भ में ***रॉस एवं रॉस*** ने कहा कि, *''सही करिअर या व्यवसाय का चुनाव न केवल व्यक्ति में सही एवं अधिक क्षमता विकसित करता है वरन् उसे सन्तोष एवं प्रसन्नता भी प्रदान करता है।''*

कार्य संतुष्टि क्या है इसे बतलाना सरल कार्य नहीं हैं, हिन्दी शब्दकोष अथवा शैक्षिक व समाजशास्त्रीय ग्रन्थों में इसकी सटीक एवं निश्चित परिभाषा नहीं मिलती है। वाक्य विन्यास के आधार पर कार्य सन्तुष्टि दो शब्दों से मिलकर बना है। प्रथम कार्य तथा द्वितीय सन्तुष्टि। कार्य का अर्थ होता है अपनाया गया कोई व्यवसाय जिसके लिए कुछ न कुछ प्रयास किया जाता है और सन्तुष्टि का अर्थ होता है सन्तोष अथवा

प्रसन्नता। शाब्दिक अर्थों में अपने कार्य अथवा पेशे से प्राप्त होने वाले आनन्द और सन्तोष को कार्य सन्तुष्टि कहा जा सकता है।

व्यवसायिक सन्तुष्टि को परिभाषित करते हुए ब्लूम तथा नेलर ने कहा है कि ''व्यवसायिक सन्तोष कर्मचारी की उन अभिवृत्तियों का परिणाम है जिन्हें वह अपने कार्य या व्यवसाय से सम्बन्धित अनेक कारकों एवं सामान्य जीवन के प्रति बनाये रखना है।''

व्यवसाय के किन पक्षों अथवा रीतियों से सन्तोष प्राप्त होता है यह मनोवैज्ञानिक विषय हैं एक व्यक्ति के लिये काम की अच्छी से अच्छी दशाएं, सामाजिक सम्मान एवं प्रतिष्ठा, उत्तम वेतन, मनोवांछित स्थान पर नियुक्ति होने के बावजूद उसे वह सन्तोष प्राप्त नहीं होता है जो किसी समान योग्यता रखने वाले किसी दूसरे व्यक्ति को कम सुविधाजनक अवस्थाओं और कम वेतन में भी प्राप्त हो जाता है। कहने का अभिप्राय यह है कि सन्तोष अथवा सन्तुष्टि एक आन्तरिक चीज है वाह्य नहीं। इसका सम्बन्ध मनुष्य के हृदय से होता है। ऐसे अनेक व्यक्ति होते है जो श्रेष्ठतम अवस्थाओं में भी असन्तुष्ट दिखाई देते हैं और इसके विपरीत अनेक ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने कार्य के प्रति सन्तुष्ट नजर आते हैं। लेकिन इसके बावजूद इस तथ्य को झुठलाया नहीं जा सकता है कि सन्तुष्टि अथवा सन्तोष की भावना के मूल में भी कुछ प्रवृत्ति मूलक और भौतिकवादी परिस्थितियाँ होती है। एक व्यक्ति किसी व्यवस्था को इतना अधिक पसन्द करता है कि वह अच्छी से अच्छी भौतिक सुविधाएं व सम्मान मिलने वाले किसी बड़े से बड़े पद को ठुकरा सकता है। इसके विपरीत कुछ लोग उसी व्यवसाय या कार्य को करना पसन्द करते है और उसी में सर्वाधिक तृप्ति अनुभव करते हैं जिसमें सर्वाधिक श्रेष्ठ आर्थिक एवं भौतिक सुविधाएँ मिलें। कहने का तात्पर्य यह है कि व्यवसाय से मिलने वाले सन्तोष के लिए सबसे पहली आवश्यकता प्रवृत्तिजन्य होती है, अर्थात् अपने स्वभाव, प्रवृत्ति रूचि और इच्छाओं के अनुरूप मिलने वाले व्यवसाय मे अधिक सन्तुष्टि की पहली शर्त है।

कार्य सन्तुष्टि का दूसरा आधार भौतिकता है। आधुनिक युग में भौतिक सुख एवं समृद्धि को सन्तोष का कारक माना गया है। यह मत विवादास्पद हो सकता है। क्योंकि इस अर्थ–प्रधान समाज में व्यक्ति सबसे अधिक असन्तुष्ट दिखाई पड़ता है। अमेरिकी समाज में अधिकांशतः यह देखने को मिलता है कि जो भौतिक रूप से सर्वाधिक सम्पन्न है वह मानसिक रूप से सर्वाधिक असन्तुष्ट है। लेकिन भौतिकता का सन्तोष से अटूट रिश्ता है। सन्तुष्टि के लिए आवश्यक है, मनुष्य रोटी, कपड़ा, मकान अथवा आने वाले कल की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति केवल भौतिक स्तर पर ही सम्भव है।

संक्षेप में कार्य सन्तुष्टि मुख्यतः दो आधारों पर प्राप्त हो सकती है। व्यक्ति को उसकी प्रकृति, स्वभाव, रूचि अथवा इच्छा के अनुरूप कार्य मिला हो तथा दूसरा उसको अपने व्यवसाय से कम से कम इतनी आर्थिक सुविधाएं अथवा वेतन मिलता हो जो उस समाज में औसतन स्तर के व्यक्ति अथवा परिवार के जीवन–यापन के लिए आवश्यक हो।

अतः शिक्षक युग निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि शिक्षक अपने कार्य से सन्तुष्ट होंगे तो निश्चित ही ऐसे समाज का निर्माण होगा जो स्वस्थ्य मस्तिष्क और बौद्धिक प्रतिभा का धनी होगा।

समस्या कथन–

''वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन के उद्देश्य–

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् पुरुष शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् महिला शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।
2. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् पुरुष शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।
3. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् महिला शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोध विधि के रूप में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या– प्रस्तुत अध्ययन में समग्र के रूप में वाराणसी जनपद में स्थित उन सभी वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरुष शिक्षकों को लिया गया है जो वर्तमान समय में शिक्षण के कार्य को सम्पादित कर रहे हैं।

प्रतिदर्श– प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श चयन विधि के रूप में साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि का प्रयोग करके वाराणसी जनपद के प्राथमिक स्तर के 40 विद्यालयों का चयन किया गया जिसमें से न्यायदर्श के रूप में 100 शिक्षकों (50 वित्तपोषित तथा 50 स्ववित्तपोषित) का चयन किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण– प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापक कृत्य संतोष मापनी (1980) का प्रयोग किया गया है। यह मापनी प्रो0 एस0 पी0 गुप्ता व जे0 पी0 श्रीवास्तव द्वारा निर्मित व मानकीकृत है। यह मापनी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक/ शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि को मापने के लिए किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँः– शोधकर्त्री के द्वारा प्रस्तुत शोध में जिन सांख्यिकीय की प्राविधियों का प्रयोग किया गया है, वे निम्नवत् हैंः–

1. मध्यमान (Mean)
2. मानक विचलन (Standard deviation)
3. मानक त्रुटि (Standard Error)
4. क्रान्तिक अनुपात या टी अनुपात (CR or t-test)

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं विवेचन

उद्देश्य–1ः वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

H_{01} –वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या–1

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि के मध्य का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, क्रान्तिक अनुपात मान

क्र. सं.	प्रतिदर्श	संख्या (N)	कार्य संतुष्टि		मानक त्रुटि (SE_m)	मध्यमानों का अन्तर (D)	क्रान्तिक अनुपात मान (C.R.)	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान
			मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)				

1.	वित्तपोषित	50	91.10	8.29	8.42	2.25	3.74	0.01 (2.63)
2.	स्ववित्तपोषित	50	82.68	7.29				

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का CR का परिगणित मान 3.74 है, जो कि क्रान्तिक अनुपात के द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए 0.01 सार्थकता स्तर के सारणीय मान 2.63 से अधिक है तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर भी CR का परिगणित मान सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार सारणी मान से स्पष्ट है कि वित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् महिला शिक्षकों में कार्य सन्तुष्टि स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है।

उद्देश्य–2: वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् पुरुष शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

H_{02} – वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् पुरुष शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या–2

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् पुरुष शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि के मध्य का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, क्रान्तिक अनुपात मान

क्र. सं.	प्रतिदर्श	संख्या (N)	कार्य संतुष्टि		मानक त्रुटि (SE_m)	मध्यमानों का अन्तर (D)	क्रान्तिक अनुपात मान (C.R.)	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान
			मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)				
1.	वित्तपोषित	25	93.84	6.36	8.40	1.42	5.92	0.01 (2.68)
2.	स्ववित्तपोषित	25	85.44	2.84				

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् पुरुष शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का CR का परिगणित मान 5.92 है, जो कि क्रान्तिक अनुपात के द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए 0.01 सार्थकता स्तर के सारणीय मान 2.68 से अधिक है तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर भी CR का परिगणित मान सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार सारणी मान से स्पष्ट है कि वित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् पुरुष शिक्षकों में कार्य सन्तुष्टि स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है।

उद्देश्य–3: वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् महिला शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

H_{03} – वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् महिला शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या–3

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् महिला शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि के मध्य का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, क्रान्तिक अनुपात मान

क्र. सं.	प्रतिदर्श	संख्या (N)	कार्य संतुष्टि		मानक त्रुटि (SE_m)	मध्यमानों का अन्तर (D)	क्रान्तिक अनुपात मान (C.R.)	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान
			मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)				
1.	वित्तपोषित	25	88.36	9.18	8.44	2.65	3.18	0.01 (2.68)
2.	स्ववित्तपोषित	25	79.92	9.19				

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् महिला शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का CR का परिगणित मान 3.18 है, जो कि क्रान्तिक अनुपात के द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए 0.01 सार्थकता स्तर के सारणीय मान 2.68 से अधिक है तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर भी CR का परिगणित मान सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार सारणी मान से स्पष्ट है कि वित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् महिला शिक्षकों में कार्य सन्तुष्टि स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष–

उद्देश्य–1: वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष– वित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों में कार्य सन्तुष्टि स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है।

उद्देश्य–2: वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् पुरुष शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष– वित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् पुरुष शिक्षकों में कार्य सन्तुष्टि स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है।

उद्देश्य–3: वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् महिला शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष– वित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् महिला शिक्षकों में कार्य सन्तुष्टि स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है।

स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों में कार्य संतुष्टि कम पाया जाना यह इंगित करता है कि स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में अधिक परेशानी का सामना करना पड़ता है। जिसका कारण शिक्षकों के ऊपर ज्यादा बोझ डालना हो सकता है। शिक्षकों में वेतन की कमी, कार्य का भार, आर्थिक संतुष्टि, सामाजिक संतुष्टि की कमी के कारण हो सकता है।

निष्कर्ष के आधार पर निम्न बिन्दुओं को बढ़ावा दिया जाना चाहिए–

1. शिक्षकों के वेतन में बढ़ोत्तरी करना चाहिए जिससे उनकी आर्थिक समस्याएँ दूर हो सके और विद्यालयीय पठन–पाठन कार्य में रूचि ले सके।

2. शिक्षकों को विद्यालय कार्य के अलावा घर के सभी कार्य देखने होते है। महिला शिक्षकों की नियुक्ति दूर होने के कारण उनमें समय का अभाव होता है जिससे उनके मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है।
3. शिक्षकों को काफी कम वेतन एवं दूर–दराज नियुक्ति के कारण उन्हें काफी आर्थिक एवं मानसिक असंतुष्टि का सामना करना होता है जिसे सरकार द्वारा वेतन वृद्धि एवं उनके घर के आप–पास ही नियुक्त देना चाहिए।?

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, शिप्रा एवं शान्ति (2017), शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि का उनकी कार्य क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर।
2. तिवारी, रंजना (2016). रींवा जिले में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षको ंकी कार्य सन्तुष्टि का समीक्षात्मक अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च एण्ड डेवेलपमेण्ट*, 1(4), पृ0 01–03।
3. नदीम एवं अन्य (2013). स्टडी ऑफ पर्सनालिटी एडजेस्टमेन्ट एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ रूरल एवं अर्बन सेकेण्डरी स्कूल टीचर, स्टैण्डर्ड जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड एसे, वाल्यूम–1(1), पृ0 25–28
4. मुछाल, महेश कुमार एवं चन्द, सतीश (2016). बी0पी0एड0 प्रशिक्षण प्राप्त ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, *एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड टेक्नोलॉजी*, 6(1), पृ0 127–132।
5. वेकेंटश्वरन एवं अन्य (2015).ए स्टडी ऑन एडजेस्टमेन्ट, जॉब सेटिसफेक्शन, जॉब इन्वाल्बमेन्ट एण्ड जॉब स्ट्रेस ऑफ प्राइवेट स्कूल सेकेण्ड्री टीचर्स, *पेरीफेक्स–इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च*, वॉल्यूम–4, इश्शू–1, पृ0 78–80।
6. सिंह, डॉ0 गजब एवं दीक्षित, नीलम (2013). महाविद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं का व्यवसाय संतोष का तुलनात्मक अध्ययन, जर्नल ऑफ एकेडेमी रिसर्च।
7. सिंह, दीप्ति (2018). शासकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, *रिसर्च मैग्मा एन इण्टरनेशनल मल्टीडिस्पिलनरी जर्नल*, 1(12), 2018, पृ0 01–08।